ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 34-35
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

पं0 शिवदत्त चतुर्वेदी का जीवन और व्यक्तित्व

अनीता शुक्ला

असि0 प्रोफे0, हिन्दी विभाग, मुलायम सिंह महाविद्यालय, कानपुर (उ0प्र0) भारत

Received- 08.05.2019, Revised- 13.05.2019, Accepted - 18.05.2019 E-mail: cpridevedi@gmail.com

सारांश : **पं0 शिवदत्त चतुर्वेदी का जन्म चम्बल नदी के सघन गहन कान्तारों में सुप्रसिद्ध तट पर स्थिति अति प्राचीन ऐतिहासिक ग्राम हथकांत 18 अक्टूबर 1915 ई0 में अश्विन शुक्ल एकादशी के दिन माथुर चतुर्वेदी ब्राम्हण परिवार में हुआ था। पूर्वज प्रसंग के सम्बन्ध में का नाम पं. बस्तीराम चतुर्वेदी था, इनकी माता का नाम फुन्दी देवी था। आपके पिता स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे।**

जमींदारी तथा इकलौते पुत्र होने के कारण काफी सुदृढ़ फिर भी शैक्षिक योग्यताओं को दृष्टिगत रखते हुये शिक्षक के दायित्व को निभाने का निश्चय किया। 1936 ई0 में आगरे के शुऐव मोसम दिया इण्टर कालेज में अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया तथा ये 1948 ई0 तक अध्यापन कार्य करते रहे, 24–25 वर्ष की अवस्था में चतुर्वेदी जी का विवाह धनवन्ती देवी से हुआ कुछ समय बाद धनवन्ती देवी की मृत्यु हो गयी, इनका पुर्नविवाह उत्तम देवी से सम्पन्न हुआ। पं0 शिवदत्त चतुर्वेदी जी के छः पुत्र तीन पुत्रियां हैं।

कुंजी शब्द – सघन, गहन, कान्तारों, जमीनदारी, सुदृढ़, शैक्षिक, योग्यता, दृष्टिगत, निश्चय, पुर्नविवाह।

सन् 1963 ई0 में उत्कृष्टतम् शैक्षणिक साहित्य सेवाओं के लिये महामहिम राष्ट्रपति सर्व पलली डा0 राधाकृष्णन द्वारा पं0 शिवदत्त चतुर्वेदी को राष्ट्रीय पुरूस्कर से सम्मानित किया गया। उनके लेख समय–समय पर पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे। आप ब्रज भाषा कवि ललित निबन्ध लेखक और आलोचक के रूप में चिर परिचित हस्ताक्षर हैं। 1948 ई0 में इन्होंने चन्दबरदाई पर समीक्षात्मक दृष्टि से एक पुस्तक लिखी जो आज भी स्नातक कक्षाओं के लिये बहुत उपयोगी है। हिन्दी साहित्य जगत में इनका योगदान सराहनीय है।

ये 1974 ई0 में प्रधानाचार्य के पद पर इटावा में स्थानांतरित हुये जहां से वे 1975 ई0 में सेवा निवृत्ति हुये, राष्ट्रीय पुरूस्कार से अलंकृत होने के कारण इन्हें दो वर्ष की सेवानिधि इनको और मिली इन्होंने इण्टर मीडियट पुस्तक (काव्याज्जंली) का भी सम्पादन किया, ये उ0प्र0 हिन्दी साहित्य सम्मेलन ब्रज साहित्य मंडल, हिन्दी साहितय सम्मेलन प्रयाग, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान, भारत सेवक समाज, आदि संस्थाओं के सदस्य एवं पदाधिकारी के रूप में देश समाज और साहित्य सेवा करते रहे।

इटावा में अखिल भारतीय सम्मेलन और अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन के लम्बे समय तक सफल संचालक थे। इटावा जनपद के प्रत्येक सामाजिक, साहित्यिक, सार्वजनिक गतिविधि के प्राण स्वरूप नगर और जनपद की कोई संस्था ऐसी नहीं बची जो ओजस्वी वाणी से परिचित न हो, कितने महत्वपूर्ण आयोजनों के संस्थापक संचालक और सफल समीक्षक हुआ करते थे। ये उम्र भर समाज को कविता के रूप में अपनी भावनाओं का शिवत्व बांटते रहे उनकी प्रशंसा में लिखा गया यह निम्नलिखित छन्द उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं की ओर महत्वपूर्ण संकेत किया है–

''वीणा वादिनी के वरद पुत्र को देवदूत को।
कोठि कोटिश; नमन तुम्हरे शिव स्वरूप को।।
दलित हिन्दी अनुप्राणित तुमने कर डाली है।
सत शिव सुन्दर काव्यस सुमन से झोली भर डाली है।।
जिनकी पा साहित्य जगत का झूम रहा कण–कण है।
हिन्दी के इस महारथी का सादर अभिनन्दन है।।

व्यक्तित्व– पं0 शिवदत्त चतुर्वेदी स्थूल शरीर के थे। उनका गौरवपूर्ण लगभग छः फुट ऊंचा हष्ट पुष्ट शरीर चौड़ा ऊंचा ललाट भरा हुआ प्रभावशाली चेहरा, उनके व्यक्तित्व की रचनात्मक छवि की अभिव्यक्ति करता था। वे हृदय से कोमल सरल स्वभाव के थे। हंसते समय उनके छोटे–छोटे दांत मोतियों की तरह चमकते थे।

उनके व्यक्तित्व की प्रशंसा करते हुये बाबू राम दूबे '' प्रेम'' ने लिखा है कि पं0 चतुर्वेदी का लम्बा कद प्रशास्त भाल मशाल सी जाज्वल्यमान आंखें लिये इटावा जनपद के चारों कोने झाड़ने वाले चतुर्वेदी जी जब हांथ में बेंत लिये अपने भराल गतिअति से घर से बाहर निकलते हैं, तो माथे पर चन्दन की बिन्दी चमक–चमक कर उनका सनातनी शील बखानती जाती है लगता है जैसे कोई देवदूत स्वर्ग से उतर कर भूमि को गौरव प्रदान करने आया है। बातों से तो ऐसा जान पड़ता था मानों वाणी में सरस्वती विराजमान हैं।

चतुर्वेदी जी को ब्रहामूर्त में उठने का अभ्यास था। प्रातः उठते ही ईश्वर स्मरण करना तथा वैदिक रीति से 3–4 घण्टे संध्या करते थे। तथा प्रातः और सायंकाल भ्रमण

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

करना उनके दैनिक जीवन का आवश्यक अंग था।

चतुर्वेदी जी का भोजन शुद्ध तथा सात्विक था मांस आदि की तो बात दूर रही वह लहसुन प्याज को छूते भी नहीं थे।

चतुर्वेदी जी अपने भाई बहनों से भी बहुत प्रेम करते थे। सबके दुख में दुखी और सबके सुख में सुखी होने वाले अपने सुख में सभी को भागीदारी समझते थे क्योंकि सुख सबके भाग्यों से है। यह उनका सिद्धान्त था। उनका कहना था कि दुख मेरे कर्मों का है और सुख अपने भाग्यों से हैं।

चतुर्वेदी अपने मित्रों के लिये कल्पतरू थे। इनमें कर्तव्य परायणता की भावना कूट–कूटकर भरी थी। उनके ज्ञान ने कभी अहंकारी नहीं बनाया था। अध्यापक होने के नाते उनका व्यक्तित्व महान और आदर्शमय था। शिक्षक के रूप मे ंजो सम्मान और श्रद्धा चतुर्वेदी जी को प्राप्त हुयी वह बहुत ही कम छात्रों को सुलभ होती है।

चतुर्वेदी लालच लोभ से कोसों दूर थे। जिन पदों पर उन्होंने कार्य किया यदि कोई दूसरा होता तो अपार सम्पत्ति और वैभव जुटा लेता किन्तु चतुर्वेदी जी दूसरी धातु के बने थे। इन्होंन हीन कर्म करके कभी अपनी आत्मा को कलुषित नहीं किया। उनकी ईमानदारी और निर्मल स्वच्छ स्वभाव ने स्वामियों के मन में चतुर्वेदी जी के प्रति हार्दिक आदर और अगाध श्रद्धा की भावना का बीजारोपण किया।

साहित्य के क्षेत्र में भी चतुर्वेदी जी का व्यक्तित्व महान था। उनके जीवन का मूल स्रोत था साहित्य, ये यश अथवा धनोपार्जन करना उन्हें रूचिकर नहीं था।

इतने ऊंचे आदर्शों का निर्वाह करने वाला महापुरूष मान–सम्मान की क्या परवाह करता कदाचित वे अपनी रचनाओं को छपने में भी तत्पर नहीं थे।

चतुर्वेदी जी के व्यक्तित्व का विश्लेषण करने से विदित होता है कि उन्होंने अपने कल्पकाल में ही देश के विद्धानों द्वारा असाधारण ख्याति प्राप्त करके अपने अद्भुत व्यक्तित्व की विशालता का परिचय दिया। हिन्दी के महान प्रचारक तथा सेवक थे उन्हें संसारिक यश और मान–सम्मान की इच्छा नहीं थी। यही कारण है कि वे स्वयं पृष्ठभूमि में रहकर हिन्दी के प्रचार प्रसार और विकास के लिये प्रौढ़ योगदान देकर मौन साधक और अथक कार्यकर्ता बने रहे। नाम के स्थान पर उपाधि से घृणा थी। साहित्य में तन और मन से डूब कर हम उतारते हैं तो चतुर्वेदी जी को एक बेदाम व्यक्ति प्रतिभा सम्पन्न साहित्यिक और सर्वप्रिय सामाजिक प्राणी पाते हैं। ये 21 मई 1988 को बहुमुखी प्रतिभा का यह अदभुत व्यक्तित्व, हमें सदा–सदा के लिये छोड़ गये।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी कविता के युगीन संदर्भ और स्वामी स्वरूप पाठक समीप लघु शोध प्रबन्ध।
2. हरीश अग्रवाल, रामराज्य, 30 दिसम्बर।
3. शिवदत्त चतुर्वेदी ''चन्दर बरदाई'' 1948 ई0, आगरा।
4. राम प्रकाश शर्मा ''प्रकाश'' 19 अक्टूबर 1975 ई0 दैनिक देशधर्म।
5. के0के0 दीक्षित, दैनिक देशधर्म 25 अक्टूबर 1985 ई0।
6. शिवदत्त चतुर्वेदी व्यक्तित्व एवं कृतित्व लघुशोध ग्रन्थ वर्ण 1990 इंदिरा दीक्षित।
7. शिवदत चतुर्वेदी ''चन्दर बरदाई'' निवेदन शिवदत चतुर्वेदी ''चन्दर बरदाई'' पृ0–6

*****